RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

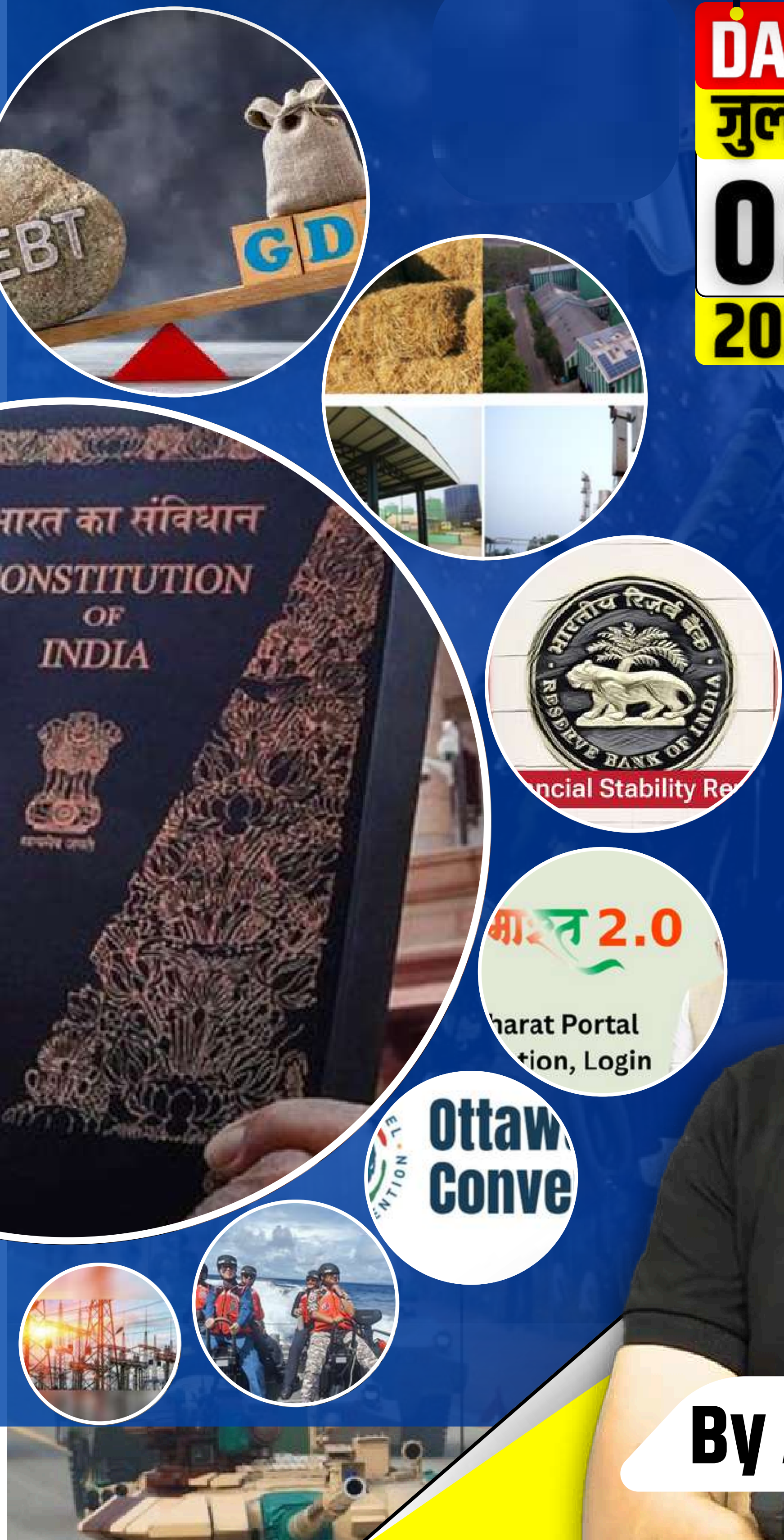

DATE
जुलाई
02
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

भारत का बाह्य ऋण / India's external debt

संदर्भ:

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, मार्च 2025 तक भारत का बाह्य ऋण (External Debt) बढ़कर **736.3 अरब अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गया है। यह पिछले वर्ष की तुलना में **67.5 अरब डॉलर की वृद्धि** को दर्शाता है, जिसमें विनिमय दरों से जुड़ी मूल्यांकन प्रभाव (valuation effects) को शामिल नहीं किया गया है।

भारत का बाह्य ऋण (External Debt) –

1. बाह्य ऋण-से-GDP अनुपात: मार्च 2025 में यह बढ़कर **19.1%** हो गया (मार्च 2024 में **18.5%** था)।

2. दीर्घकालिक बनाम अल्पकालिक ऋण:

- **दीर्घकालिक ऋण:** $601.9 बिलियन – मामूली वृद्धि
- **अल्पकालिक ऋण का हिस्सा:** घटकर **18.3%** हुआ

3. ऋण की मुद्रा संरचना (Composition):

- **अमेरिकी डॉलर:** 54.2% (सबसे अधिक)
- **भारतीय रुपया:** 31.1%
- इसके बाद **जापानी येन** और **SDRs (Special Drawing Rights)**

4. उधारकर्ता (Borrowers):

- **गैर-वित्तीय कॉरपोरेशन्स:** 35.5% (सबसे अधिक)
- **डिपॉजिट-टेकिंग कॉरपोरेशन्स:** 27.5%
- **सामान्य सरकार:** 22.9%

5. ऋण साधन (Debt Instrument):

- **ऋण (Loans):** 34% – सबसे बड़ा हिस्सा
- इसके बाद मुद्रा और जमा

6. ऋण सेवा: ऋण की सेवा (मुख्यधन और ब्याज भुगतान) में 0.1% की मामूली गिरावट दर्ज की गई

External Debt (बाह्य ऋण) क्या है?

परिभाषा: बाह्य ऋण वह हिस्सा है जो किसी देश द्वारा **विदेशी ऋणदाताओं** से लिया गया होता है। इनमें शामिल होते हैं:

- **संप्रभु सरकारें (Sovereign Governments)**
- **अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान** (जैसे IMF, World Bank)
- **निजी वाणिज्यिक संस्थाएं (Private Commercial Entities)**

वर्गीकरण:

बाह्य ऋण को दो श्रेणियों में बाँटा जाता है:

- **दीर्घकालिक ऋण:** जिसकी **मूल परिपक्वता अवधि एक वर्ष से अधिक** होती है
- **अल्पकालिक ऋण:** जिसकी **मूल परिपक्वता अवधि एक वर्ष तक** होती है

बढ़ते बाह्य ऋण (External Debt) से उत्पन्न चुनौतियाँ:

1. मुद्रा जोखिम:

- भारत के 50% से अधिक बाह्य ऋण की मुद्रा अमेरिकी डॉलर में है।
- यदि रुपया कमजोर होता है, तो ऋण चुकाने का बोझ बढ़ जाता है।

2. अल्पकालिक जोखिम:

- हालाँकि अल्पकालिक ऋण का अनुपात घटा है, लेकिन
- अल्पकालिक ऋण बनाम विदेशी मुद्रा भंडार अनुपात बढ़ा है – यह वैश्विक अस्थिरता के समय ऋण पुन:निर्गमन जोखिम को बढ़ाता है।

3. संप्रभु क्रेडिट जोखिम:

- यदि बाह्य ऋण लगातार बढ़ता है, लेकिन निर्यात या GDP वृद्धि उसी अनुपात में नहीं होती,
- तो भारत की क्रेडिट रेटिंग पर असर पड़ सकता है,
- जिससे भविष्य में ऋण लेना महंगा हो जाएगा।

4. ब्याज भुगतान का बोझ:

- बाह्य ऋण बढ़ने से ब्याज भुगतान में वृद्धि होती है।
- इससे चालू खाते में प्राथमिक आय घाटा बढ़ सकता है।

भारत के बाह्य ऋण प्रबंधन हेतु रणनीतियाँ:

1. **रुपये-मूलक उधारी को बढ़ावा:** मसाला बॉन्ड्स और द्विपक्षीय मुद्रा समझौतों को प्रोत्साहित कर डॉलर पर निर्भरता कम करें।
2. **ऋण पारदर्शिता को सुदृढ़ करें:** निजी क्षेत्र के बाह्य ऋण और उसकी मुद्रा जोखिम (currency exposure) को ट्रैक करने के लिए समग्र निगरानी ढांचा विकसित करें।
3. **ECBs पर सख्त निगरानी:** गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFCs) और स्टार्टअप्स द्वारा लिए गए बाह्य वाणिज्यिक ऋणों (ECBs) पर विशेष निगरानी की आवश्यकता है।
4. **विदेशी मुद्रा भंडार को मजबूत बनाना:** निर्यातोन्मुख औद्योगिक नीति के माध्यम से विदेशी मुद्रा की आय बढ़ाएं।

जैव ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए MNRE ने बायोमास दिशा-निर्देशों में संशोधन / MNRE Revises Biomass Guidelines to Boost Bio Energy

संदर्भ:

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) ने *राष्ट्रीय बायोएनेर्जी कार्यक्रम* के **चरण-1 (Phase-I)** के तहत *बायोमास कार्यक्रम* के लिए **संशोधित दिशा-निर्देश** जारी किए हैं। इन दिशा-निर्देशों का उद्देश्य *बायोमास आधारित ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा* देना और *स्वच्छ एवं सतत ऊर्जा स्रोतों* के उपयोग को प्रोत्साहित करना है।

संशोधित दिशानिर्देशों की प्रमुख विशेषताएँ:

1. सरल प्रक्रियाएँ: कागजी कार्यवाही और अनुमोदन की बाधाएं कम की गईं, विशेषकर MSMEs के लिए लाभकारी।

- ब्रिकेट/पैलेट निर्माण इकाइयों के लिए दस्तावेज़ीकरण आवश्यकताओं में ढील।

2. तकनीकी एकीकरण:

- महंगे SCADA सिस्टम की जगह IoT आधारित निगरानी या त्रैमासिक डेटा सबमिशन को बढ़ावा।
- डिजिटल उत्तरदायित्व सुनिश्चित करते हुए संचालन लागत में कमी।

3. बाज़ार लचीलापन:

- पहले की 2-वर्षीय अनुबंध की अनिवार्यता हटाकर सामान्य विक्रय समझौता (General Sale Agreement) की अनुमति दी गई।
- इससे उद्योग बाज़ार मांग के अनुसार तेजी से समायोजन कर सकेंगे।

4. प्रदर्शन-आधारित सब्सिडी:

- Central Financial Assistance (CFA) के अंतर्गत:
  - ≥80% दक्षता वाले प्रोजेक्ट को **पूर्ण सब्सिडी**।
  - <80% दक्षता वाले प्रोजेक्ट को **प्रो-राटा आधार** पर सब्सिडी।

5. निरीक्षण मानदंड का सरलीकरण (Rationalized Inspection Criteria):

- निरीक्षण अब कमीशनिंग या इन-प्रिंसिपल अप्रूवल के 18 महीने के भीतर हो सकता है।
- 3 दिनों (16 घंटे/दिन) की संचालन शर्त घटाकर 1 दिन (10 घंटे की लगातार अवधि) की गई।

6. क्षेत्रीय समन्वय: **दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और NCR (राजस्थान और उत्तर प्रदेश)** के बायोमास पैलेट उत्पादक अब MNRE या CPCB योजनाओं में से किसी एक का चयन कर सकते हैं, जो अधिक लाभकारी हो।

बायोमास (Biomass) क्या है?

परिभाषा: बायोमास उन सजीव स्रोतों से प्राप्त जैविक पदार्थों को कहते हैं जो वनस्पतियों और जानवरों से उत्पन्न होते हैं। इसका उपयोग **ऊर्जा उत्पादन** सहित अनेक उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

शामिल घटक:

- वनों का अपशिष्ट, कृषि कार्यों से उत्पन्न अवशेष, उद्योगों से उत्पन्न जैविक प्रोसेस्ड अपशिष्ट, नगरपालिका/शहरी ठोस कचरा

भारत में उत्पादन स्थिति:

- भारत में प्रति वर्ष लगभग **750 मिलियन मीट्रिक टन (MMT)** बायोमास का उत्पादन होता है।
- इसमें से लगभग **228 MMT बायोमास अधिशेष (surplus)** होता है, जिसका उपयोग ऊर्जा उत्पादन आदि में किया जा सकता है।

राष्ट्रीय जैव ऊर्जा कार्यक्रम:

उद्देश्य: देश में उपलब्ध अधिशेष बायोमास, पशु गोबर, औद्योगिक और शहरी जैविक कचरे का उपयोग ऊर्जा उत्पादन के लिए करना।

प्रमुख विशेषताएँ:

- यह कार्यक्रम **ऊर्जा पुनर्प्राप्ति (Energy Recovery)** को बढ़ावा देता है।
- कार्यक्रम के अंतर्गत **केंद्रीय वित्तीय सहायता (Central Financial Assistance - CFA)** प्रदान की जाती है।

CFA किन घटकों :पर लागू होती हैं:

- बिजली उत्पादन (Power Generation)
- बायोगैस/बायो-CNG उत्पादन (Biogas/BioCNG Generation)
- ब्रिकेट/पैलेट निर्माण (Briquette/Pellet Manufacturing)

संशोधित दिशानिर्देशों का उद्देश्य:

- **स्वीकृत संयंत्रों को समय पर वित्तीय सहायता सुनिश्चित करना।**
- **नए बायोमास संयंत्रों की स्थापना को प्रोत्साहित करना।**
- **कृषि अपशिष्ट के सतत प्रबंधन** को बढ़ावा देना।
- **पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण** की समस्या का समाधान करना।

निष्कर्ष:

ये संशोधन **हरित ऊर्जा, पर्यावरण संरक्षण और किसानों की आयवृद्धि** की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

भारतीय संविधान में सेक्युलर और सोशलिस्ट / Secular and Socialist in Indian Constitution

संदर्भ:

संविधान की प्रस्तावना (Preamble) से **'समाजवादी'** और **'धर्मनिरपेक्ष'** शब्दों को हटाने की मांग समय-समय पर फिर से उठती रही है। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि ये दोनों शब्द संविधान के 1951 में लागू होने के समय प्रस्तावना का हिस्सा नहीं थे, बल्कि इन्हें 1976 में 42वें संविधान संशोधन के माध्यम से जोड़ा गया था।

भारतीय संविधान में 'सेक्युलर' और 'सोशलिस्ट' शब्दों का अर्थ

1. सेक्युलर (Secular) का अर्थ: भारत में 'सेक्युलर' का अर्थ है कि राज्य किसी धर्म का पक्ष नहीं लेता। भारत सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता को अपनाता है, यानी राज्य सभी धर्मों का समान सम्मान करता है और किसी एक विशेष धर्म को बढ़ावा नहीं देता।

संवैधानिक आधार:

- अनुच्छेद 14: सभी को कानून के समक्ष समानता
- अनुच्छेद 15: धर्म के आधार पर भेदभाव वर्जित
- अनुच्छेद 16: धर्म के आधार पर सरकारी नौकरियों में भेदभाव नहीं
- अनुच्छेद 25: धर्म की स्वतंत्रता
- अनुच्छेद 26: धार्मिक संस्थाओं के प्रबंधन की स्वतंत्रता

मुख्य विशेषताएँ:

- **धार्मिक स्वतंत्रता:** हर नागरिक को अपनी पसंद का धर्म अपनाने, प्रचार करने और पालन करने का अधिकार।
- **सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान:** राज्य सभी धर्मों को समान रूप से मान्यता देता है और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देता है।

2. सोशलिस्ट (Socialist) का अर्थ: 'सोशलिस्ट' का अर्थ है सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता को बढ़ावा देना। यह पूर्ण राज्य नियंत्रण की बात नहीं करता, बल्कि सार्वजनिक कल्याण और निजी क्षेत्र के बीच संतुलन की वकालत करता है।

संवैधानिक आधार:

- **42वां संविधान संशोधन (1976)** के तहत 'सोशलिस्ट' शब्द को प्रस्तावना में जोड़ा गया।
- भारतीय समाजवाद का मॉडल **लोकतांत्रिक समाजवाद** है, न कि कम्युनिस्ट।
- नीति निर्देशक सिद्धांत (Part IV) में सामाजिक और आर्थिक समानता की दिशा में राज्य को मार्गदर्शन दिया गया है।

मुख्य विशेषताएँ:

- **कल्याणकारी राज्य (Welfare State):** सभी नागरिकों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित करना।
- **आर्थिक न्याय (Economic Justice):** संपत्ति और संसाधनों का समान वितरण, गरीबी उन्मूलन, वंचित वर्गों के लिए विशेष योजनाएं, और सामाजिक सुरक्षा।

"Socialist" और "Secular" शब्द क्यों जोड़े गए?

1. संविधान सभा में प्रारंभिक बहस

संविधान निर्माण के दौरान कुछ सदस्य, जैसे **प्रोफेसर के.टी. शाह**, ने प्रस्तावना में "socialist" और "secular" जोड़ने का सुझाव दिया था।

- **डॉ. भीमराव आंबेडकर** ने इसका विरोध किया।
- उनका तर्क था कि:
  - **ऐसी नीतियाँ लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत चुनी हुई सरकार तय करे**, न कि उन्हें स्थायी रूप से संविधान में शामिल किया जाए।
  - अगर कोई विशेष आर्थिक या धार्मिक नीति को संविधान में लिख दिया जाए, तो यह **लोकतांत्रिक लचीलापन (democratic flexibility)** को बाधित करेगा।

2. राजनीतिक उद्देश्य:

- **इंदिरा गांधी सरकार** ने आपातकाल (Emergency, 1975–77) के दौरान “Garibi Hatao” जैसे नारों के साथ **समाजवाद** को बढ़ावा दिया।
- **"Socialist" शब्द को संविधान में जोड़ना**, उनकी नीतियों को **संवैधानिक वैधता** देने का माध्यम बना।
- यह दिखाने का प्रयास था कि सरकार **आर्थिक असमानता को दूर करने और गरीबों के कल्याण** को लेकर प्रतिबद्ध है।

3. धर्मनिरपेक्षता को पुष्टि देना

- 1970 के दशक में **सांप्रदायिक तनाव** और धार्मिक राजनीति के बढ़ते प्रभाव के बीच, सरकार ने “**Secular**” शब्द जोड़कर स्पष्ट किया कि –
  - भारत का राज्य **किसी धर्म का पक्ष नहीं लेता**,
  - और सभी धर्मों को **समान रूप से सम्मान** देता है।
- यह कदम भारत की **बहुलतावादी परंपरा और समावेशी संविधान** को बल देने के लिए उठाया गया था।

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट / Financial Stability Report

संदर्भ:

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा जुलाई 2025 में जारी वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (Financial Stability Report - FSR) के अनुसार, **वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं** और **भूराजनैतिक तनावों** के बावजूद भारत दुनिया की आर्थिक वृद्धि का एक प्रमुख प्रेरक (growth driver) बना हुआ है।

रिपोर्ट की प्रमुख बिन्दु-

1. व्यापक आर्थिक मजबूती:

- भारत वैश्विक विकास का प्रमुख इंजन बना हुआ है; FY 2026 के लिए GDP वृद्धि दर **6.5%** रहने का अनुमान।
- यह वृद्धि मजबूत घरेलू बुनियादी ढांचे और **संतुलित नीतियों** पर आधारित है।
- बाहरी प्रभावों और जलवायु जोखिमों के बावजूद, मुद्रास्फीति नियंत्रण में बनी हुई है।
- CPI (उपभोक्ता मूल्य सूचकांक) मई 2025 में **2.8%** पर पहुंचा – फरवरी 2019 के बाद सबसे कम, अप्रैल 2025 में यह 3.2% था।

2. वित्तीय प्रणाली की स्थिति:

- बैंकिंग और गैर-बैंकिंग क्षेत्र दोनों में मजबूत पूंजी भंडार, कम NPA और स्वस्थ लाभप्रदता बनी हुई है।
- कॉर्पोरेट क्षेत्र की बैलेंस शीट सुदृढ़ है, जिससे समग्र आर्थिक स्थिरता को बल मिला है।

3. तनाव परीक्षण के नतीजे:

- Scheduled Commercial Banks (SCBs) गंभीर आर्थिक झटकों के परिदृश्य में भी अच्छी तरह पूंजीकृत हैं।
- NBFCs में भी मजबूत पूंजी भंडार, बेहतर संपत्ति गुणवत्ता (asset quality), और मजबूत कमाई के संकेत मिले हैं।
- म्युचुअल फंड, क्लियरिंग कॉरपोरेशन, और बीमा क्षेत्र भी मजबूत स्थिति में हैं; इनकी solvency ratios नियामक मानकों से ऊपर हैं।

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (एफएसआर) के बारे में:

- **प्रकाशन संस्था:** यह रिपोर्ट भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा वर्ष में दो बार (biannual) प्रकाशित की जाती है।
- **प्रमुख उद्देश्य:** यह रिपोर्ट भारतीय वित्तीय प्रणाली की मजबूती (resilience) और वित्तीय स्थिरता पर संभावित खतरों का आकलन प्रस्तुत करती है।

स्रोत: यह रिपोर्ट, वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (FSDC) की उप-समिति द्वारा किए गए सामूहिक मूल्यांकन (collective assessment) पर आधारित होती है।

महत्व:

- बैंकों, NBFCs, बीमा कंपनियों, और अन्य वित्तीय संस्थानों की जोखिम उठाने की क्षमता और स्थिरता को मापती है।
- यह नीति निर्माताओं को समय रहते जोखिमों की पहचान और समुचित हस्तक्षेप की दिशा में मार्गदर्शन देती है।
- वित्तीय बाजारों में पारदर्शिता और विश्वास बनाए रखने में सहायक है।

वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद:

स्थापना: वर्ष **2010** में भारत सरकार द्वारा एक गैर-सांविधिक (non-statutory) शीर्ष निकाय के रूप में गठित।

अध्यक्ष: केंद्रीय वित्त मंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं।

सदस्य:

- **भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)** के गवर्नर
- **SEBI, IRDAI, PFRDA** के अध्यक्ष
- **FMC** (अब SEBI में विलय)
- **वित्त सचिव** और अन्य वरिष्ठ अधिकारी
- वर्ष **2018 में इसका दायरा बढ़ाया** गया, जिससे अधिक समन्वय सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य कार्य:

- वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देना और बनाए रखना
- वित्तीय क्षेत्र का विकास सुनिश्चित करना
- विनियामक संस्थाओं के बीच समन्वय को बढ़ावा देना
- वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन, और व्यापक आर्थिक निगरानी (macroprudential supervision) से जुड़ी समस्याओं का समाधान करना

महत्व:

- यह भारत की वित्तीय प्रणाली में जोखिमों की निगरानी और नीति समन्वय का एक प्रमुख मंच है।
- इसके अंतर्गत, **Financial Stability Report (FSR)** जैसी प्रमुख रिपोर्टें तैयार की जाती हैं, जो नीति निर्माण में सहायक होती हैं।

MY Bharat 2.0 प्लेटफ़ॉर्म / MY Bharat 2.0 Platform

संदर्भ:

युवा मामलों और खेल मंत्रालय (MYAS) ने MY Bharat 2.0 प्लेटफ़ॉर्म के विकास हेतु **डिजिटल इंडिया कॉरपोरेशन (DIC)** के साथ एक **समझौता ज्ञापन (MoU)** पर हस्ताक्षर किए हैं। इस पहल का उद्देश्य युवाओं को डिजिटल रूप से सशक्त बनाना और राष्ट्र निर्माण में उनकी भागीदारी को बढ़ाना है।

MY Bharat (Mera Yuva Bharat) प्लेटफॉर्म:

परिचय:

- **MY Bharat** एक **डायनामिक टेक्नोलॉजी प्लेटफॉर्म** है जो भारत के युवाओं को **संरचित और सार्थक तरीके** से जोड़ने व सशक्त करने हेतु एक **संस्थागत ढांचा** प्रदान करता है।
- इसका उद्देश्य युवाओं में **सिविक जिम्मेदारी** और **राष्ट्रीय विकास** की भावना को प्रोत्साहित करना है।

लॉन्च:

- इसे **वर्ष 2023** में आधिकारिक रूप से लॉन्च किया गया था।
- अब तक **1.76 करोड़ युवा** और **1.19 लाख से अधिक संगठन** इस पर पंजीकृत हो चुके हैं।

मुख्य विशेषताएँ:

- युवा डिजिटल प्रोफाइल बना सकते हैं, वालंटियरिंग और लर्निंग प्रोग्राम्स में भाग ले सकते हैं, मेंटर्स और साथियों से जुड़ सकते हैं।
- यह उन्हें 2047 तक विकसित भारत के निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

MY Bharat 2.0 (अपग्रेडेड प्लेटफॉर्म):

- इसे राष्ट्रीय डिजिटल यूथ प्लेटफॉर्म के रूप में अपग्रेड किया गया है।
- Modular architecture पर आधारित होगा जिससे इसकी scalability बढ़ेगी।
- **नई AI-आधारित सुविधाएँ** शामिल की जाएंगी जैसे: Smart CV Builder, व्यक्तिगत डिजिटल प्रोफाइल, AI चैटबॉट्स, Speech-to-text, WhatsApp इंटीग्रेशन, Voice navigation द्वारा enhanced accessibility

महत्व:

- यह मंच युवाओं को डिजिटल रूप से सशक्त बनाकर, उन्हें राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भागीदार बनाता है।
- यह प्लेटफॉर्म भारत को Amrit Kaal में जनभागीदारी **आधारित विकास मॉडल** की ओर अग्रसर करता है।

ओटावा कन्वेंशन / Ottawa Convention

संदर्भ:

यूक्रेन ने हाल ही में ओटावा कन्वेंशन (1997 में पारित अंतरराष्ट्रीय संधि जो मानवाधारक जमीनी खानों के उत्पादन, उपयोग, भंडारण और स्थानांतरण पर प्रतिबंध लगाती है) से वापसी की घोषणा की है।

एंटी-पर्सनल लैंडमाइन कन्वेंशन, 1997 (Ottawa Treaty):

परिचय:

- यह एक अंतरराष्ट्रीय संधि है जिसका उद्देश्य है एंटी-पर्सनल लैंडमाइंस के उपयोग, उत्पादन, भंडारण और स्थानांतरण पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना।
- इसे Ottawa Convention या Anti-Personnel Mine Ban Treaty के नाम से भी जाना जाता है।

मुख्य तथ्य:

- **ग्रहण किया गया:** सितंबर 1997, ओस्लो डिप्लोमैटिक कॉन्फ्रेंस में
- **प्रभाव में आया:** मार्च 1999
- **वर्तमान सदस्य देश:** 166 देश (जून 2025 तक)
- **नई स्थिति (2025):** पोलैंड, लिथुआनिया, लातविया, एस्टोनिया, फिनलैंड और यूक्रेन ने इस संधि से बाहर निकलने का फैसला किया
- **गैर-सदस्य देश:** भारत, अमेरिका, रूस, चीन, पाकिस्तान (अब तक इस संधि पर हस्ताक्षर या अनुमोदन नहीं किया)

उद्देश्य व प्रावधान:

- **सिर्फ एंटी-पर्सनल लैंडमाइंस पर प्रतिबंध** (न कि एंटी-व्हीकल या एंटी-टैंक माइंस पर)
- **स्टॉकपाइल विनाश की अनिवार्यता:** संधि में शामिल होने के **4 वर्षों के भीतर** सभी एंटी-पर्सनल लैंडमाइंस का विनाश अनिवार्य
- **पीड़ित सहायता प्रावधान:** शारीरिक अक्षमता या अंग-हानि झेल चुके पीड़ितों की सहायता को शामिल किया गया है

भारत का रुख:

- भारत का मानना है कि **राष्ट्रीय सुरक्षा और सीमा रक्षा** को ध्यान में रखते हुए **निर्विरोध प्रतिबंध व्यवहारिक नहीं है**, खासकर जब पड़ोसी देश इस संधि का हिस्सा नहीं हैं।
- भारत की नीति है कि लैंडमाइन का उपयोग केवल **सुरक्षा और सैनिकों की रक्षा** के लिए हो, और **नागरिकों को हानि न हो**।

समुद्री पर्यवेक्षक मिशन / Observer Mission

संदर्भ:

भारत, जापान, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया की कोस्ट गार्ड्स ने पहली बार "QUAD at Sea Ship Observer Mission" लॉन्च किया है, जो इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में समुद्री संचालन एवं जागरूकता को मजबूत करने का एक ऐतिहासिक कदम है।

QUAD समुद्री अभ्यास में 'Observer-at-Sea' पहल:

परिचय:

- यह पहली बार है जब **भारतीय तटरक्षक बल (Indian Coast Guard)** ने **जापान, अमेरिका** और **ऑस्ट्रेलिया** की तटरक्षक एजेंसियों के साथ एक **Observer-at-Sea** अभ्यास में भाग लिया है।
- यह साझेदारी **QUAD नेताओं के 2024 के Wilmington Declaration** पर आधारित है।

प्रमुख विशेषताएं:

उद्देश्य:

- एक **मुक्त, समावेशी, और नियम-आधारित इंडो-पैसिफिक क्षेत्र** को मजबूत करना।
- **समुद्री डोमेन जागरूकता (Maritime Domain Awareness)** और **साझा समुद्री सुरक्षा हितों** को बढ़ावा देना।

भारत की भूमिका:

- यह मिशन भारत की **SAGAR नीति (Security and Growth for All in the Region)** को बल देता है।
- साथ ही यह भारत की **Indo-Pacific Oceans Initiative (IPOI)** को भी समर्थन करता है, जो क्षेत्रीय सहयोग, समुद्री पर्यावरण संरक्षण, और आपदा प्रतिक्रिया में साझेदारी पर केंद्रित है।

रणनीतिक महत्व:

- **QUAD देशों के बीच विश्वास और इंटरऑपरेबिलिटी** को बढ़ावा मिलता है।
- **सुरक्षा चुनौतियों**, जैसे समुद्री तस्करी, अवैध मछली पकड़ना, और आपदा प्रतिक्रिया में समन्वय मजबूत होता है।
- भारत की **हिंद-प्रशांत में नेतृत्वकारी भूमिका** को और सुदृढ़ करता है।

निष्कर्ष: 'Observer-at-Sea' पहल भारत की **समुद्री कूटनीति** और **क्षेत्रीय रणनीतिक सक्रियता** का प्रमाण है, जो QUAD सहयोग को व्यवहारिक और सुरक्षा-केंद्रित आयाम प्रदान करती

भारत ऊर्जा स्टैक / India Energy

संदर्भ:

भारत सरकार की शक्ति मंत्रालय ने *India Energy Stack* विकसित करने हेतु एक 17-सदस्यीय कार्यदल का गठन किया है, जिसका मार्गदर्शन **नंदन Nilekani** के संरक्षकत्व में किया जाएगा।

क्या है India Energy Stack?

- **India Energy Stack** भारत का एक **डिजिटल फ्रेमवर्क** है जो देश के **विखंडित ऊर्जा पारिस्थितिकी तंत्र** को एकीकृत करता है।
- इसका उद्देश्य है **उत्पादकों, उपभोक्ताओं, ग्रिड ऑपरेटरों, रेगुलेटर्स और फिनटेक** के बीच **रीयल-टाइम समन्वय** सुनिश्चित करना।
- यह प्रणाली **उदारीकरण, विकेंद्रीकरण, ऊर्जा लेनदेन, और कार्बन ट्रैकिंग** को सक्षम बनाती है।

मुख्य विशेषताएं:

- **इंटरऑपरेबिलिटी:** सभी ऊर्जा प्लेटफ़ॉर्म एक-दूसरे से संवाद कर सकें, इसके लिए एकीकृत ढांचा।
- **स्केलेबिलिटी:** राज्य या क्षेत्रीय सीमाओं से परे ऊर्जा समाधान का विस्तार करना।
- **पारदर्शिता और डेटा आधारित निर्णय:** पारदर्शी बिलिंग, ट्रैकिंग, और नीति निर्माण के लिए हार्मोनाइज्ड डेटा।
- **पीयर-टू-पीयर ट्रेडिंग:** उपभोक्ता आपस में ऊर्जा खरीद-बेच सकें (प्रॉस्यूमर मॉडल)।
- **कार्बन ट्रैकिंग:** उत्सर्जन स्तर पर निगरानी और नेट-ज़ीरो लक्ष्यों में सहायता।

ऐसी प्रणाली की आवश्यकता क्यों थी?

भारत में ऊर्जा क्षेत्र की चुनौतियाँ:

- **संविधान की समवर्ती सूची में शामिल होने के कारण** बिजली क्षेत्र में **राज्य और केंद्र की साझा जिम्मेदारी** है, जिससे टुकड़ों में काम होता है।
- **कोई यूनिक कंज़्यूमर/एसेट ID नहीं** – डेटा का कोई केंद्रीकृत ढांचा नहीं।
- **प्लेटफॉर्म्स के बीच असंगतता** – तकनीकी एकीकरण और स्केलेबिलिटी में बाधा।
- **इंटरऑपरेबिलिटी का अभाव** – एक राज्य से दूसरे में या DISCOM के बीच ऊर्जा लेनदेन मुश्किल।

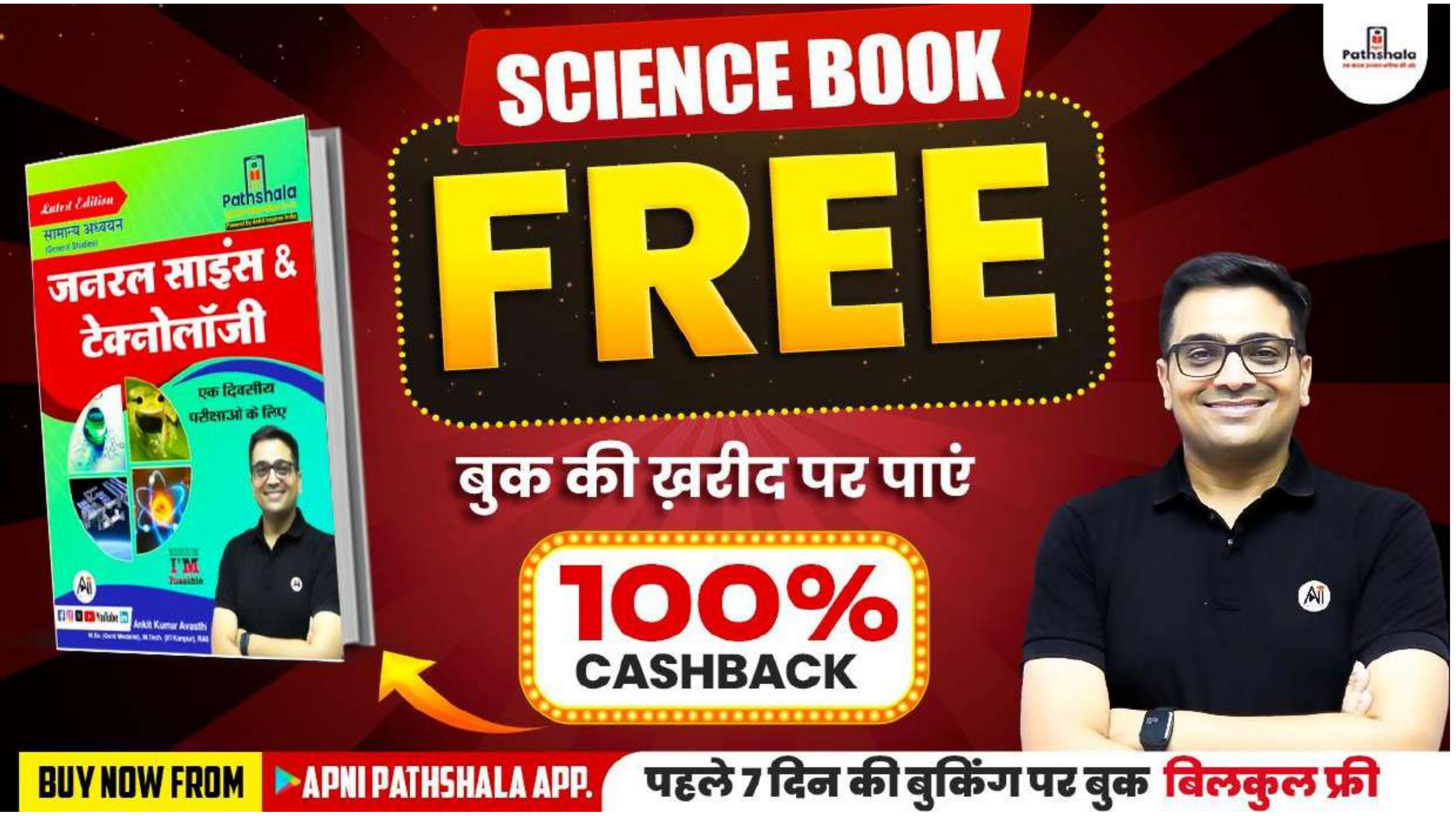

Pathshala
SCIENCE BOOK
FREE
Latest Edition
Pathshala
सामान्य अध्ययन
(General Studies)
जनरल साइंस &
टेक्नोलॉजी
एक दिवसीय
परीक्षाओं के लिए
I'M
Possible
Ankit Kumar Avasthi
बुक की ख़रीद पर पाएं
100%
CASHBACK
BUY NOW FROM
APNI PATHSHALA APP.
पहले 7 दिन की बुकिंग पर बुक बिलकुल फ्री

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
ECONOMY
POLITY
HISTORY
GEOGRPHY
1500X4
₹ 6000/-
₹4500/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

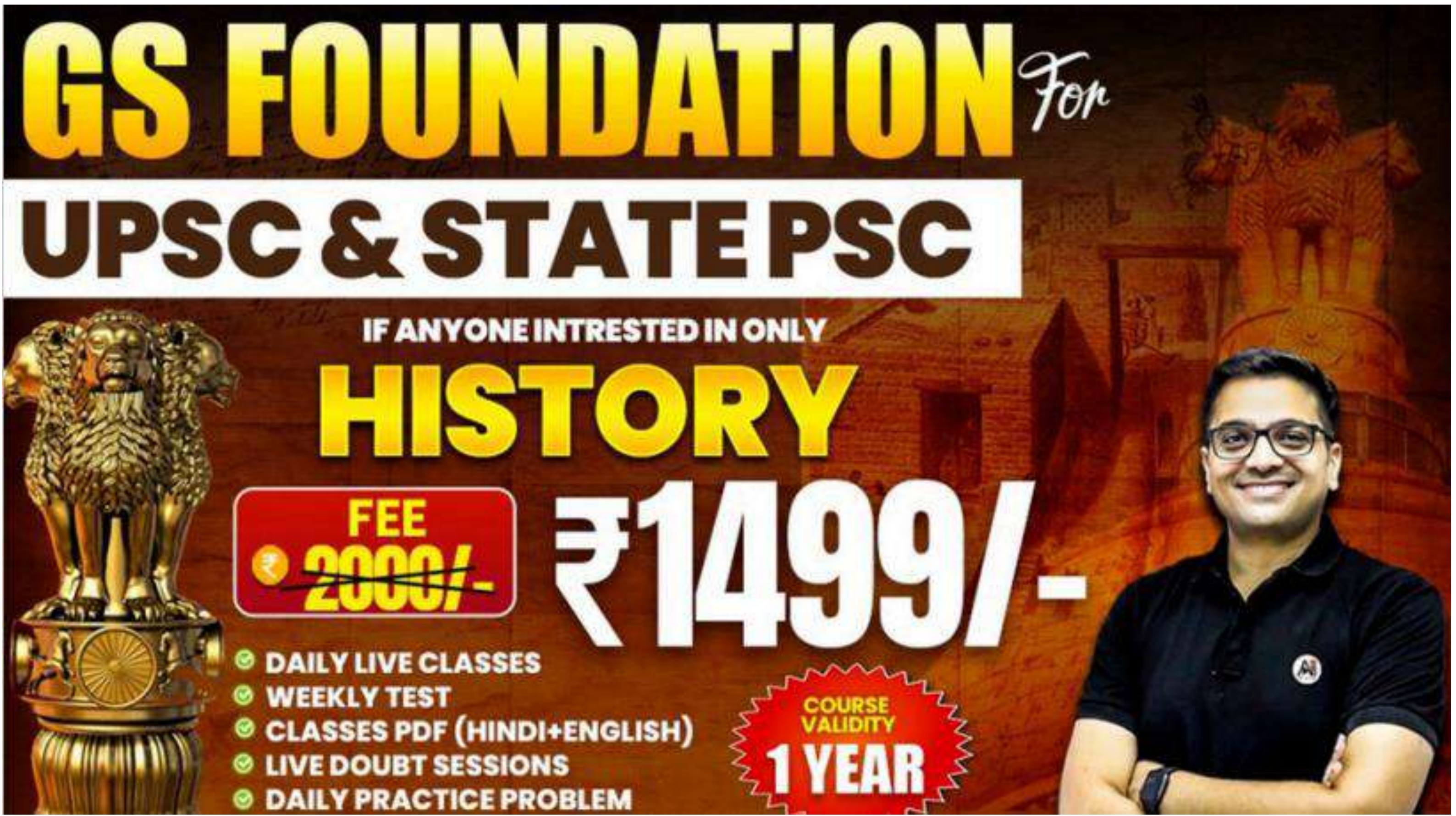
GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
IF ANYONE INTRESTED IN ONLY
HISTORY
FEE
₹ 2000/-
₹1499/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
IF ANYONE INTRESTED IN ONLY
ECONOMY
FEE
2000/-
₹1499/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

जानिए
भारतीय संविधान
CONSTITUTION OF INDIA
मात्र
1499/-Year
Enroll Now !
1 year validity

GS FOUNDATION
Hand Written Notes
BEST OFFER 1999Rs
4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट
अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
Bilingual
भारतीय भूगोल
भौतिक तथा विश्व भूगोल
By Ankit Avasthi Sir

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण
RNA : Real News Analysis
MONTHLY CURRENT AFFAIRS
MONTH
जनवरी, 2025
By Ankit Avasthi Sir
MONTHLY MAGAZINE
FREE!
अधिक जानकारी के लिए दिए गए
नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
Billingual
ANKIT AVASTHI SIR

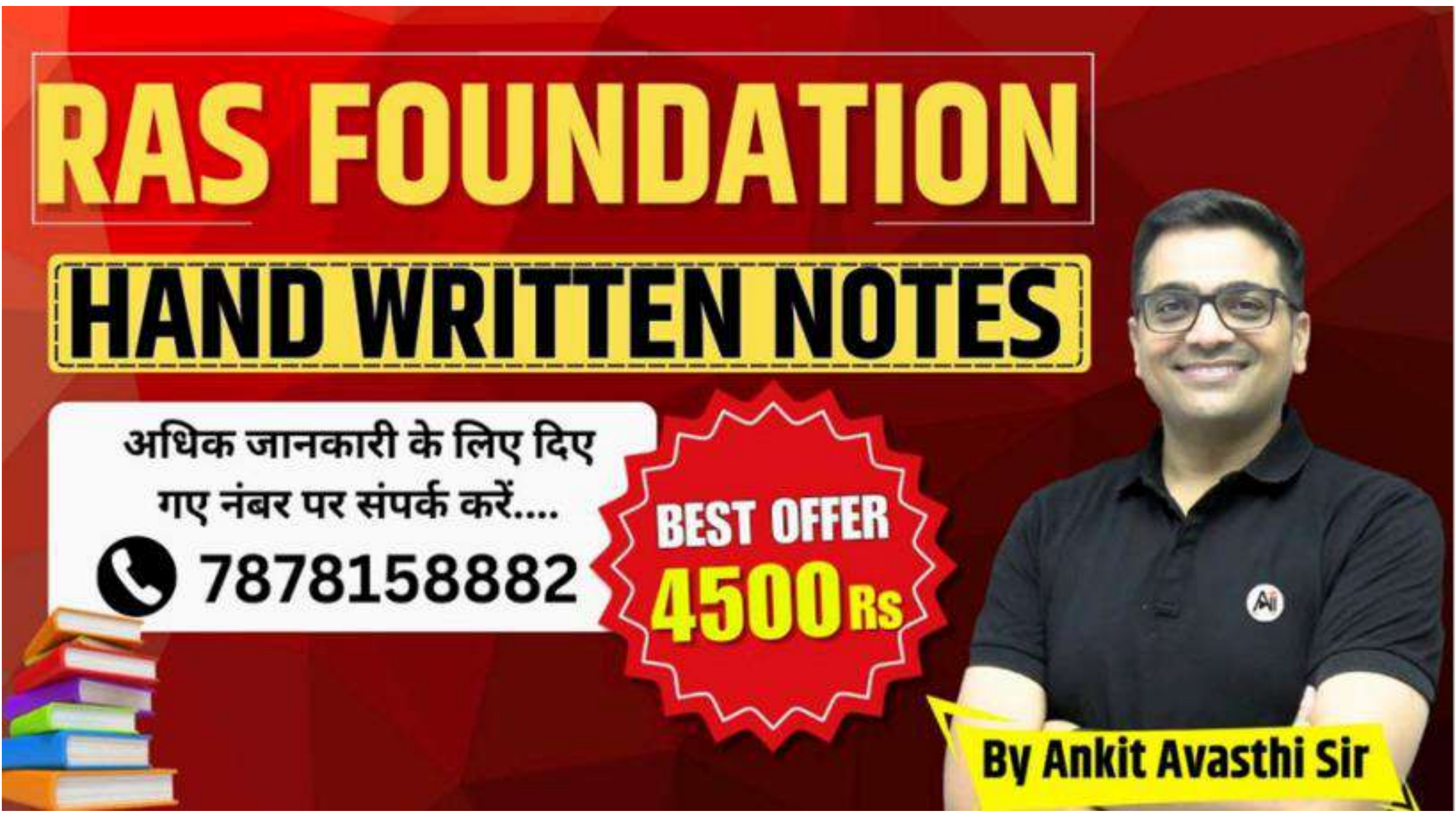
RAS FOUNDATION
HAND WRITTEN NOTES
अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
BEST OFFER
4500 Rs
By Ankit Avasthi Sir

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
BBK
Baaten Bazaar ki
COUPON CODE
ANKIT500
Course fee
₹1999/-
Course fee
₹1499/-
Special
OFFER ON
Father's
DAY
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुआत

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
COUPON CODE
ANKIT500
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
Course fee
₹1499/-
Special
OFFER ON
Father's
DAY
Course Validity
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

CALL
CENTRE
7878158882
HOW MAY I HELP YOU
AnkitInspiresIndia
Download "Apni Pathshsla" app now!
Follow us: